बेटी की सच्ची सहेली मां

बेटी के प्रति मां के दायित्व

आज की चकाचौंध भरी दुनिया में आपकी बेटी के लिए एक मां के अतिरिक्त उसकी सच्ची सहेली, हितैषी व मार्गदर्शिका और कोई हो नहीं सकती।

आप भी अपनी बेटी के जीवन को सफल, सार्थक और सक्षम बनाने में अपने दायित्व का निर्वाह करें।

शीला सलूजा
चुन्नीलाल सलूजा

बेटी की सच्ची सहेली

मां

बेटी के प्रति मां के दायित्व

बेटी को एक ऐसी विश्वासपात्र मित्र की आवश्यकता होती है जो उसकी बदलती हुई मनोदशा, शारीरिक और मानसिक परिवर्तनों, मन में उठने वाली जिज्ञासाओं, भ्रांतियों, वर्जनाओं को कह-सुन सके, उससे अपने दिल की बात कह सके और समाधान पाकर संतुष्ट हो सके। यह उसकी मां ही हो सकती है।

➤ मातृत्व दीर्घ तपस्या है।

—प्रेमचंद

➤ पनी संतान का अहित कोई माता नहीं कर सकती।

—प्रेमचंद

➤ कन्यादान महादान है। जिसने यह दान न दिया, उसका जन्म व्यर्थ गया।

—प्रेमचंद

➤ मनुष्य वही होते हैं, जो उनकी माता उन्हें बनाती है।

—इमर्सन

➤ माता का हृदय संतान की पाठशाला है।

—बीचर

➤ इस सृष्टि में मां से बड़ा हितैषी और शुभचिंतक कोई पैदा नहीं हुआ है।

—मनुस्मृति

शीला सलूजा एवं चुन्नीलाल सलूजा की अन्य श्रेष्ठ पुस्तकें

बच्चों की प्रतिभा कैसे उभारें
बच्चों में छिपी प्रतिभा को पहचान कर उसे उभारने के ठोस उपाय सुझाने वाली मां-बाप और संरक्षकों के लिए एक बुनियादी पुस्तक।

खुशहाल जीवन जीने के व्यावहारिक उपाय
बदले हुए जमाने के हिसाब से इस पुस्तक में बताए उपायों पर अमल करें और जीने की आधुनिक कला सीखें, फिर देखिए आपका जीवन कितनी जल्दी होगा खुशहाल।

सुघड़ गृहिणी
गृहिणी की जीवन-शैली, दायित्व एवं व्यवहार पर एक सशक्त अध्ययन, जो आज की गृहिणी को पूरी तरह जागरूक और सक्षम बनाने में सहायक है।

वी एण्ड एस पब्लिशर्स की पुस्तकें

देश-भर के रेलवे, रोडवेज़ तथा अन्य प्रमुख बुक स्टॉलों पर उपलब्ध हैं। अपनी मनपसंद पुस्तकों की किसी भी नजदीकी बुक स्टॉल से मांग करें। यदि न मिलें, तो हमें पत्र लिखें। हम आपको तुरंत वी.पी.पी. द्वारा भेज देंगे। इन पुस्तकों की निरंतर जानकारी पाने के लिए विस्तृत सूची-पत्र मंगवाएं या हमारी वेबसाइट देखें

www.vspublishers.com

पूर्णतया संशोधित एवं
परिवर्द्धित संस्करण

बेटी की सच्ची सहेली

मां

बेटी के प्रति मां के दायित्व

शीला सलूजा
चुन्नीलाल सलूजा

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

प्रकाशक

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

☎ 23240026, 23240027 • *फैक्स:* 011-23240028

E-mail: info@vspublishers.com • *Website:* www.vspublishers.com

शाखाः हैदराबाद

5-1-707/1, ब्रिज भवन (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लेन के पास)

बैंक स्ट्रीट, कोटी, हैदराबाद - 500 095

☎ 040-24737290

E-mail: vspublishershyd@gmail.com

शाखा : मुम्बई

जयवंत इंडस्ट्रिअल इस्टेट, 1st फ्लोर-108, तारदेव रोड

अपोजिट सोबो सेन्ट्रल, मुम्बई - 400 034

☎ 022-23510736

E-mail: vspublishersmum@gmail.com

फ़ॉलो करें:

© कॉपीराइटः वी एण्ड एस पब्लिशर्स

ISBN 978-93-521502-3-6

DISCLAIMER

इस पुस्तक में सटीक समय पर जानकारी उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास किया गया है। पुस्तक में संभावित त्रुटियों के लिए लेखक और प्रकाशक किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होंगे। पुस्तक में प्रदान की गयी पाठ्य सामग्रियों की व्यापकता या सम्पूर्णता के लिए लेखक या प्रकाशक किसी प्रकार की वारंटी नहीं देते हैं।

पुस्तक में प्रदान की गयी सभी सामग्रियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन के तहत सरल बनाया गया है। किसी भी प्रकार के उद्धरण या अतिरिक्त जानकारी के स्रोत के रूप में किसी संगठन या वेबसाइट के उल्लेखों का लेखक या प्रकाशक समर्थन नहीं करता है। यह भी संभव है कि पुस्तक के प्रकाशन के दौरान उद्धृत बेवसाइट हटा दी गयी हो।

इस पुस्तक में उल्लिखित विशेषज्ञ के राय का उपयोग करने का परिणाम लेखक और प्रकाशक के नियंत्रण से हटकर पाठक की परिस्थितियों और कारकों पर पूरी तरह निर्भर करेगा।

पुस्तक में दिये गये विचारों को आजमाने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना आवश्यक है। पाठक पुस्तक को पढ़ने से उत्पन्न कारकों के लिए पाठक स्वयं पूर्ण रूप से जिम्मेदार समझा जायेगा।

उचित मार्गदर्शन के लिए पुस्तक को माता-पिता एवं अभिभावक की निगरानी में पढ़ने की सलाह दी जाती है। इस पुस्तक के खरीददार स्वयं इसमें दिये गये सामग्रियों और जानकारी के उपयोग के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं।

इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री का कॉपीराइट लेखक/प्रकाशक के पास रहेगा। कवर डिजाइन, टेक्स्ट या चित्रों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन किसी इकाई द्वारा किसी भी रूप में कानूनी कार्रवाई को आमंत्रित करेगा और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार समझा जायेगा।

स्वकथन

एक पुरानी सामाजिक मान्यता है कि जब बाप का जूता बेटे के पैरों में आने लगता है, तो बाप बेटे के साथ मित्रवत् व्यवहार करने लगता है। इसी मान्यता को प्रतिष्ठा देने वाले अभिभावक जहां युवा होते बेटे की भावनाओं को समझने लगते हैं, वहीं उन्हें जीवन की जटिलताओं और दुनियादारी से भी परिचित कराने लगते हैं, ताकि वे सामाजिक संतुलन के साथ जी सकें और अपने आप को सामाजिक व पारिवारिक अपेक्षाओं के अनुकूल बना सकें।

पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था के कारण अब तक लड़कियों की तरफ न तो ध्यान दिया गया और न ही इस विषय में कुछ अधिक सोचा गया। उसे खूंटे पर बंधी गाय से अधिक सामाजिक और पारिवारिक प्रतिष्ठा नहीं दी गई। आज संपूर्ण परिवार और सामाजिक व्यवस्था का केंद्र महिला बन गई है। यहां तक कि उसे राजनीतिक अधिकारों से भी संपन्न किया जाने लगा है। अर्थ तंत्र में भी उसकी भागीदारी सुनिश्चित हो गई है। यह अनुभव किया जाने लगा है कि लड़कियों की सामाजिक अवस्था का पुनर्मूल्यांकन हो, ताकि समाज में उसे सम्मानजनक स्थान प्राप्त हो सके। नई प्रगतिशील सामाजिक सोच में जहां एक ओर लड़के-लड़कियों में भेदभाव की दीवारें टूट रही हैं, वहीं लड़कियों की प्रगति और उन्नति के भी नित्य नए मानदंड स्थापित हो रहे हैं और अब समाज में उनकी पहचान बनने लगी है।

यह सामाजिक मान्यता है कि गुरु के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता। यदि गुरु की भूमिका कोई मित्र निभाने लगे, तो इसे सोने पे सुहागा कहना अधिक सार्थक होगा। मां बेटी की पहली गुरु होती है। उसे यदि मित्र अथवा सहेली की प्रतिष्ठा मिल जाए, तो न केवल वह बेटी के समुन्नत भविष्य का निर्माण करेगी, बल्कि वह उसे उस जीवन के लिए भी प्रशिक्षण देगी, जो उसे आगे चलकर जीना है।

बेटी मां की आंखों में हमेशा उस विश्वास को तलाशती है, जो उसे जीने की सच्ची राह बताता है। परस्पर विश्वास एक ऐसा स्नेह स्रोत है, जिस पर उनकी संपूर्ण

व्यावहारिक सोच आधारित है। स्त्रियों में केवल दोष देखने की प्रवृत्ति का ही परिणाम है कि लड़कियां वर्षों से शोषित होती रही हैं। बदलती परिस्थितियों में स्त्री शिक्षा ने लड़कियों को उस स्थान पर पहुंचा दिया है, जहां उनकी अधिक उपेक्षा करना न केवल घातक आचरण होगा, बल्कि सामाजिक अन्याय भी होगा। इन सब तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में मां के सहेली रूप को उजागर करके न केवल उन्हें जीवन की सच्चाइयों के प्रति चेतावनी दी गई है, बल्कि उनकी सोच को भी मुखरित किया गया है, ताकि वे अपने जीवन को सामाजिक और पारिवारिक अपेक्षाओं के अनुरूप राष्ट्रीय हितों से जोड़ सकें।

सुशिक्षित, सुसंस्कृत, चरित्रवान स्त्रियां इसलिए भी सामाजिक धरोहर हैं, क्योंकि ये ही आगामी संतति की जन्मदाता हैं। संस्कृति की पोषक, आधार और संवाहक हैं।

भारतीय संस्कृति के स्वरूप पर यौन स्वच्छंदता के पड़ते नित्य नए प्रहार जिस अपसंस्कृति को प्रोत्साहन दे रहे हैं, उसके कारण लड़कियों से संबंधित यौन शोषण की घटनाएं निरंतर बढ़ रही हैं। विवाह विच्छेद के दुष्परिणाम चेतावनी के रूप में हमारे सामने प्रश्न-चिह्न बनकर उभर रहे हैं। सांस्कृतिक प्रदूषण के इस वातावरण में आशा की एक ही किरण शेष बचती है और वह है, मां का सहेली रूप। मां का सहेली रूप ही लड़कियों की मानवीय दुर्बलताओं को समझता है और वह ही उसे इन दुर्बलताओं पर विजय पाने के योग्य बना सकती है। मां की मैत्री पाकर लड़कियां संकोच से ऊपर उठकर अपनी रक्षा स्वयं करेंगी। मां का मैत्री भरा संबल लड़कियों को अपने पैरों पर खड़ा होने के योग्य बनाएगा। सामाजिक अनैतिकता के विरुद्ध आवाज उठाने का साहस लड़कियों में तभी आएगा, जब उन्हें मां का ठोस संरक्षण प्राप्त होगा। यह संरक्षण बेटी की शक्ति बढ़ाएगा। ऐसी लड़कियां अपनी अस्मिता की रक्षा स्वयं कर सकती हैं। नारी चरित्र के विषय में भारतीय संस्कृति के इस आदर्श को कभी न भूलें कि प्रत्येक पुरुष मां का सदैव ऋणी होता है।

अंत में इतना ही कि पुस्तक की सार्थकता के संबंध में आपके विचार जानकर हमें प्रसन्नता होगी। आपके अमूल्य सुझाव देश की लड़कियों की सोच को एक नई दिशा देंगे, हमें विश्वास है।

आप सभी के प्रति सद्भावनाओं, शुभ कामनाओं के साथ।

–शीला सलूजा/चुन्नीलाल सलूजा

अंदर के पृष्ठों में

संस्कार दायिनी मां	....	9
विकास क्रम में सहेली की उपयोगिता	....	15
समझदारी की खुली सोच	....	21
सुरक्षा विषयक सोच	....	26
स्वास्थ्य विषयक सोच	....	33
बात उन चार दिनों की	....	38
बेटी की मां से अपेक्षाएं	....	41
बेटी पर उठती सवालिया नजरें	....	46
भावुकता—एक कमजोरी	....	51
सौंदर्य बोध जगाएं	....	55
आधुनिकता इसमें नहीं...	....	60
प्रेम के रास्ते मुश्किल हैं	....	65
युवा बेटी से मित्रता	....	71
कैरियर की सोच	....	76
ब्लैकमेल होने से बचाएं	....	83
सुघड़ता विरासत में दें	....	90
शादी एक अनिवार्यता	....	96
जब आपकी बेटी कामकाजी हो	....	102
दांपत्य जीवन की सोच	....	108
बेटी के घर-संसार में मां का हस्तक्षेप	....	116
बेटी को संस्कार के साथ अधिकार दें	....	122
मां-बेटी में मैत्री संबंधों के टिप्स	....	128

जो लोग मां से शक्ति, भक्ति, गौरव और प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं, वे लोक-परलोक में विजय प्राप्त करते हैं।

मनुस्मृति में कहा गया है कि इस सृष्टि में मां से बड़ा हितैषी और शुभचिंतक कोई पैदा ही नहीं हुआ है।

नहिं सत्यात्परोधर्मः नहिं मातृसमो गुरुः।

अर्थात् सत्य से बढ़कर कोई और धर्म नहीं, मां से बढ़कर कोई गुरु नहीं।

–इसी पुस्तक से...

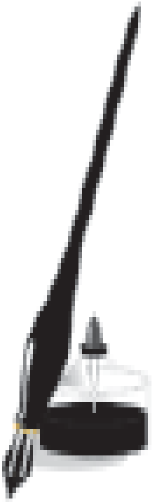

संस्कार दायिनी मां

जो लोग मां से शक्ति, भक्ति, गौरव और प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं, वे लोक-परलोक में विजय प्राप्त करते हैं।

मनुस्मृति में कहा गया है कि इस सृष्टि में मां से बड़ा हितैषी और शुभचिंतक कोई पैदा ही नहीं हुआ है।

'नहिं सत्यात्परोधर्मः नहिं मातृसमो गुरुः' अर्थात् सत्य से बढ़कर कोई और धर्म नहीं, मां से बढ़कर कोई गुरु नहीं।

जिस प्रकार से स्त्रीत्व की परिणति मातृत्व में है, उसी प्रकार से मातृत्व की आकांक्षाएं संतान के पोषण में फलीभूत होती हैं। मां से ही बच्चे सच्ची प्रेरणाएं, स्नेह, प्रेम और सद्भावनाएं प्राप्त करते हैं। माता की प्रतिष्ठा ही समस्त स्त्री जाति का सम्मान है।

पितन्वते धियो अस्मा-अपासि वस्त्रा पुत्राय मातरो वसांसि...। पुत्र-पुत्री के संबंध में यह शाश्वत सत्य आज भी प्रासंगिक है कि मां अपने पुत्र के लिए कपड़े बुनती है और शिशु के लिए सुविचारों-संस्कारों को देती है।

शिशु, वह चाहे लड़का हो अथवा लड़की, मां उसमें किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं करती। जन्म से पड़े हुए ये संस्कार ही बाहरी प्रभाव अथवा वातावरण से प्रभावित होकर बढ़ते हैं। कौटिल्य के अनुसार जन्म से लेकर पांच वर्ष तक की अवस्था में बच्चे को मां का लाड़-प्यार मिलता है। इस अवस्था में बच्चे पर मां का पूरा-पूरा प्रभाव पड़ता है। बच्चे मां के दूध के साथ ही अपनी मातृभाषा सीख लेते हैं। धर्म और जाति के संस्कार भी उस पर प्रभाव दिखाने लगते हैं। इन बच्चों को समाज

और प्रकृति का पूरा-पूरा संरक्षण प्राप्त होता है। परिवार का प्रत्येक सदस्य शिशु के लिए अपने दायित्वों का निर्वाह करता है। आशय यह है कि बच्चों को संस्कारवान् बनाने का अंतिम दायित्व मां का ही होता है, इसलिए कहते हैं कि मां ही बच्चे की पहली गुरु होती है। प्रारंभिक शिक्षा के बारे में यह बात निर्विवाद रूप से सत्य है कि शिक्षक के अच्छे प्रयासों के बाद भी बच्चों को वे संस्कार नहीं दिए जा सकते, जो मां देती है। मां का स्नेहिल संरक्षण, दृढ़ विश्वास और कार्य-क्षमता आदि ऐसे गुण हैं, जो बच्चों को संस्कार रूप में मिलते हैं, जिससे वे विकसित और पल्लवित होते हैं। ये संस्कार बीज रूप में उनके शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास में सहयोगी होते हैं।

गर्भस्थ शिशु पर भी पड़ते हैं संस्कार

गर्भावस्था में ही गर्भस्थ जीव पर इन संस्कारों का प्रभाव पड़ता है। गर्भावस्था में पड़े हुए ये संस्कार जन्म के बाद वातावरण से प्रभावित होकर स्थाई संस्कार, आदतें और व्यवहार में बदलने लगते हैं। वात्सल्य भाव एक ऐसा गुण है, जो मां के अनुभव बनकर बच्चे का सर्वाधिक कल्याण करता है। जीवन में प्रत्येक बात को अपने अनुभवों द्वारा जानकर मां बच्चों के कल्याण के लिए परोसती है। इस विषय में महात्मा गांधी का विचार था, ''मैं अनुभव से यह कह सकता हूं कि बालक की शिक्षा की शुरुआत मां के उदर से ही हो जाती है। गर्भाधान के समय की मां-बाप की मानसिक स्थिति का प्रभाव बच्चों की प्रकृति पर पड़ता है।'' आधुनिक चिकित्सा शास्त्री भी इस सत्य को प्रमाणित कर चुके हैं और सलाह देते हैं कि भावी संतान के लिए पति-पत्नी के बीच मधुर संबंधों का होना अनिवार्य है, अन्यथा पैदा होने वाला बच्चा मानसिक स्तर पर अवश्य ही असामान्य पैदा होगा। मां की गर्भकालीन मानसिक अवस्था, प्रकृति, आहार-विहार के अच्छे-बुरे प्रभाव पाकर बच्चा जन्म लेता है। जन्म के बाद वह माता-पिता का अनुसरण करने लगता है।

गर्भावस्था में गर्भस्थ जीव पर संस्कारों का प्रभाव पड़ता है। इसके अनेक उदाहरण हमारे धार्मिक और सामाजिक ग्रंथों में मिलते हैं। चूंकि गर्भावस्था में मां और गर्भस्थ शिशु पर बाहरी वातावरण का प्रभाव समान रूप से पड़ता है, इसलिए परिवार का वातावरण स्वस्थ, प्रसन्न, शुभ, तनाव रहित, स्नेहिल और संस्कारित होना चाहिए। गर्भवती को सुरुचिपूर्ण सत्संग, आहार-विहार, मानसिक शुचिता, शालीनतायुक्त स्नेहिल वातावरण में रह कर गर्भस्थ शिशु को बुरी आदतों, कुत्सित विचारों और भावनाओं से, तामसिक भोजन, वीभत्स दृश्यों, अश्लील विचारों, मादक पदार्थों, धूम्रपान आदि से दूर रखना चाहिए, ताकि होने वाले शिशु पर इनका कोई प्रभाव न पड़े। उत्तेजक फिल्मी दृश्य, हिंसा प्रधान फिल्में, घटनाएं, टी.वी. संस्कृति का प्रभाव आदि

ऐसे प्रसंग हैं जिनके संबंध में बड़ी गंभीरता से विचार कर गर्भस्थ शिशु पर होने वाले इनके कुप्रभावों के प्रति सावधान रहना चाहिए। अभिभावकों को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि स्त्री-पुरुष को संसर्ग केवल शारीरिक सुखानुभूति के लिए नहीं, बल्कि पैदा होने वाले बच्चे को ध्यान में रख कर करना चाहिए। अभिभावकों की इस प्रकार की सोच और सावधानी से पैदा होने वाली संतान सुसंस्कृत तो होगी ही, साथ ही परिवार और समाज पर बोझ नहीं बनेगी।

बच्चों को संस्कारवान बनाने में मां की भूमिका

मां हमेशा जीवनादर्शों की शिक्षा देती रही है। संतान को धर्म का मार्ग दिखाती रही है। ऐसी माताएं ही स्त्री जाति का गौरव बढ़ाती रही हैं। ऐसी माताएं जो स्वयं अपने चरित्र, दूरदर्शिता, न्यायप्रियता, धर्मनिष्ठा के लिए समाज में अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त कर सकी हैं, वे ही अपनी बेटियों की सहेली बन उन्हें भी न्याय-नीति और व्यवहार में निपुण करती रही हैं। ऐसी संस्कारित लड़कियां समाज में न केवल अपना स्थान आप बनाने में समर्थ रही हैं, बल्कि अन्याय और शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने में भी सफल रही हैं।

आधुनिक मान्यता

प्राचीन परंपराएं और व्यवहार आज भी नीति सम्यक् और प्रासंगिक हैं। माताएं आज भी बेटे-बेटियों की प्रथम प्रेरणा हैं। आज जबकि गृहिणी को परिवार की अन्य अनेक जिम्मेदारियों का निर्वाह करना पड़ रहा है, बेटी के प्रति उसके उत्तरदायित्व और भी बढ़ गए हैं।

बेटी को मां से मित्रवत् व्यवहार की सदैव आवश्यकता रहती है। विशेष कर तब, जब बेटी किशोरावस्था को प्राप्त कर 'रजस्वला' होने लगती है, तो उसे एक ऐसे विश्वासपात्र मित्र की आवश्यकता होती है, जो उसकी बदलती हुई मनोदशा, शारीरिक और मानसिक परिवर्तनों, मन में उठने वाली जिज्ञासाओं को विश्वास में लेकर उससे 'दिल की बात' कर सके, सुन सके, उसे समझ सके।

सिनेमाई-संस्कृति, फैशन और ग्लैमर की चमक-दमक, टी.वी. चैनलों की भरमार आदि का प्रभाव हमारे सामाजिक जीवन पर पड़ रहा है। परिणामस्वरूप स्वच्छंद यौनाचार की बातें अब आम होने लगी हैं, जो अपराध बनकर सामाजिक जीवन को प्रदूषित कर रही हैं। कामकाजी लड़कियों, महिलाओं के सामने परोसे जा रहे प्रलोभन, आकर्षण और चमक-दमक की मृगतृष्णा आदि उनके लिए नई-नई समस्याएं पैदा कर रहे हैं। इस भौतिक चकाचौंध में मां ही सहेली बनकर स्कूल-कॉलेजों में पढ़ रही लड़कियों को भटकन की इन अंधी गलियों से बचा सकती है।

इस विषय में कौटिल्य की सोच थी कि दस से पंद्रह वर्ष की अवस्था में लड़के-लड़कियों को एक विश्वासपात्र मित्र की आवश्यकता होती है। कौटिल्य ने जिस दस से पंद्रह वर्ष की अवस्था में मां को बेटी की सहेली बनने की बात कही है, उसी बात को दिल्ली के प्रसिद्ध सामाजिक विचारक श्री राम अवतार गुप्ता ने स्पष्ट करते हुए सावधान किया कि बारह से सत्रह वर्ष की अवस्था की लड़कियों को यदि मां का सहेली के रूप में व्यवहार, विश्वास और सहयोग मिल जाता है, तो उसका वर्तमान और भविष्य संवर जाता है। वह अपने सामाजिक और पारिवारिक आदर्शों को सहज प्राप्त कर सकती है।

पारिवारिक स्नेह का केंद्र लड़की

कुछ परिवारों में किसी भ्रामक धारणा के कारण लड़कियों को अनचाही संतान समझा जाता है और उसकी सामाजिक उपेक्षा होती है, जबकि यह नितांत रुग्ण मानसिक सोच है। वास्तव में लड़कियां परिवार में स्नेह का केंद्र होती हैं और लड़की को भी परिवार के प्रत्येक सदस्य से उतना ही स्नेह प्राप्त होता है जितना कि पुत्र को। जहां तक धर्म-ग्रंथों का संबंध है, उनमें कहीं भी लड़कियों की उपेक्षा करने का कोई उदाहरण नहीं मिलता। यदि लड़की उपेक्षित है, तो मां को सोचना चाहिए कि वह स्वयं भी तो लड़की है। ऋग्वेद में तो इस बात का उल्लेख किया गया है कि पिता से पुत्र को जो आनन्द प्राप्त होता है, उससे कहीं अधिक आनन्द की अनुभूति पुत्री से मां को मिलती है।

पुत्री परिवार में स्नेह, पवित्रता, प्रेम, आस्था और समर्पण की सोच को विकसित करने वाली होती है। हमारे सामाजिक जीवन में ऐसे अनेक पर्व हैं जिनमें बहन अथवा पुत्री के बिना सब कुछ सूना होता है। सामाजिक जीवन में वे भाई अपने आप को भाग्यहीन समझते हैं, जिनकी बहन नहीं होती। बहन अथवा पुत्री स्नेह स्रोत होती हैं, जिससे जीवन में सरसता बनी रहती है। बहन-भाई के बीच स्नेह की जलती ज्योति जीवन की सरसता को बढ़ाती है। इसलिए यह सोच कि बेटी सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित है, गलत सोच है। इसका कहीं कोई ठोस आधार नहीं है। अगर लड़के से वंश चलता है, तो इस वंश को चलाने वाली किसी-न-किसी की बेटी ही होती है। आज भी प्राचीन धर्म-ग्रंथों में इस प्रकार के दृष्टांत मिलते हैं कि प्राचीन समय में पुत्री पाने के लिए घी में तिल तथा चावल पकाकर खाते थे, क्योंकि उनका विश्वास था कि इस प्रकार का आहार खाने से पुत्री प्राप्त होने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

पुत्र को पुत्री से श्रेष्ठ, उत्तम और अच्छा समझने की सोच भौतिकवादी सोच है। सच तो यह है कि मां-बाप के मन में पुत्र-पुत्री के लिए कहीं कोई दुर्भावना नहीं

होती। हां, कुछ सामाजिक बुराइयों के कारण लड़कियों को अवांछनीय समझा जाने लगा है, जबकि इस विषय में आज भी यह धार्मिक मान्यता है कि पुत्री का जन्म अनेक पुण्यों का फल है, जो भाग्यशाली पुरुषों को ही मिला है। जन्म से पूर्व भ्रूण लिंग की जानकारी प्राप्त करने के लिए परीक्षण कराना और फिर पता लग जाने के बाद कन्या-भ्रूण समापन की सोच तथा कथित कुलीन परिवारों में घर करती जा रही है। सामाजिक अपराध का यह जघन्य अपराध एक ऐसा आचरण है, जो सामाजिक व्यवस्था को प्रदूषित कर रहा है। कालांतर में ही इसके दुष्प्रभाव भी समाज को भोगने पड़ेंगे। अतः इस प्रकार के अनैतिक व्यवहारों पर समय रहते अंकुश लगाने की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक अनुभव की जाने लगी है, क्योंकि इससे जनसंख्या का अनुपात असंतुलित होने लगा है।

माताएं क्या करें

इस संबंध में विचार, भावनाएं और मत चाहे कितने ही क्यों न हों, मां को चाहिए कि जवान होती लड़कियों की सहेली बनकर उनके मन में पैदा होने वाली भ्रामक धारणाओं, अंतर्द्वंद्वों, संदेहों और भ्रांतियों को दूर करें, क्योंकि इस प्रकार की बातें और व्यवहार लड़कियों में हीनता पैदा करते हैं तथा उन्हें मानसिक दृष्टि से पंगु, भीरु और उपेक्षित बनाते हैं। शिक्षा और प्रगतिशील सोच के माध्यम से मां को लड़कियों की सामाजिक, पारिवारिक और आर्थिक स्थिति में परिवर्तन लाना चाहिए। समाज में लड़की का स्थान, उसकी पहचान, उसकी प्रतिष्ठा केवल मां ही बना सकती है। इसलिए मां को चाहिए कि वह घर की चारदीवारी में लड़कियों को कैद करने की सोच से मुक्त हो। आधुनिक लड़कियों की सोच को खुला आकाश दें, ताकि वे सफलताओं की नई ऊंचाइयों तक उड़ सकें।

मां को अपनी बेटी के भविष्य को सुनहरा बनाने के लिए इन व्यवहारों को अपनाना चाहिए :

- लड़की-लड़के में किसी प्रकार का भेद-भाव न बरतें। लड़के-लड़कियों के खान-पान, पालन-पोषण, शिक्षा, पहनावे और भविष्य निर्माण की सोच में अंतर न लाएं।
- लड़के-लड़कियों को समान रूप से उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप जेब खर्च दें।
- लड़कियों को भी लड़कों के बराबर घूमने-फिरने, पिकनिक आदि पर जाने के अवसर प्रदान करें। उन पर अनावश्यक रूप से अविश्वास प्रकट कर पाबंदियां न लगाएं।